Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(*https://jetjournal.us/*)
Volume 9, Issue 3 – Sep 2019

UGC CARE I

मिथिलेश्वर के उपन्यास 'प्रेम ना बाड़ी ऊपजै' में सामाजिक सरोकार

डॉ. राधा भारद्वाज, सहायक प्राध्यापक, हिंदी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फतेहाबाद, आगरा

सारांश :

मिथिलेश्वर के उपन्यासों में विभिन्न प्रकार के संघर्षों का चित्रण मिलता है। उनकी अधिकांश रचनाओं में पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक संघर्ष निरंतर दिखाई देते हैं। संघर्ष मनुष्य को केवल कमजोर नहीं बनाता, बल्कि उसे जीवन की अनेक स्थितियों, भावनाओं और विचारधाराओं से भी परिचित कराता है। मिथिलेश्वर के उपन्यासों में ग्रामीण, कस्बाई और शहरी संस्कृति का यथार्थपरक स्वरूप स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। गद्य की अनेक विधाओं की तरह 'उपन्यास' भी भारतेन्दु युग की महत्त्वपूर्ण देन है। भारतीय नवजागरण के इस दौर में कला, ज्ञान और समाज के अछूते तथा अपरिचित क्षेत्रों की खोज और अन्वेषण की जो प्रक्रिया आरंभ हुई, हिंदी उपन्यास उसी प्रक्रिया की स्वाभाविक परिणति के रूप में सामने आया। गद्य की अनेक विधाओं में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपनी तेजस्वी उपस्थिति दर्ज कराई थी, किंतु उपन्यास-विधा की ओर वे अपेक्षित ध्यान नहीं दे सके। फिर भी उनके निबंधों में कथात्मकता के प्रति जो आग्रह दिखाई देता है, उससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यदि उन्हें अधिक समय मिला होता, तो वे उपन्यास-विधा में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते थे।

भारतेन्दु की रचनात्मक सजगता का परिचय इस बात से मिलता है कि उन्होंने 'पूर्ण प्रकाश' और 'चंद्रप्रभा' नामक उपन्यासों का बंगला से हिंदी में अनुवाद करवाया था। भारतेन्दु युगीन सुधारवादी दृष्टिकोण के अनुरूप इन रचनाओं में एक ओर वृद्ध-विवाह जैसी सामाजिक कुरीति के दोषों को उजागर किया गया, वहीं दूसरी ओर इस समस्या के समाधान के रूप में लड़कियों की शिक्षा पर बल दिया गया। मिथिलेश्वर हिंदी के प्रसिद्ध यथार्थवादी कथाकार हैं। उनकी रचनाओं में ग्रामीण जीवन, सामाजिक विषमता, वर्ग-संघर्ष और मानवीय संबंधों की गहराई को प्रमुखता से अभिव्यक्त किया गया है। 'प्रेम ना बाड़ी ऊपजै' उपन्यास में मिथिलेश्वर ने भारतीय ग्रामीण समाज की जटिलताओं, वर्ग-भेद, स्त्री-पुरुष संबंधों, जातीय विषमता और प्रेम की सामाजिक स्वीकृति के प्रश्न को अत्यंत संवेदनशील और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

मुख्य संबोध : अपरिचित, स्वाभाविक, रचनात्मक, सुधारवादी, समस्या, ग्रामीण मौलिकता, संस्कृति, सभ्यता,

विषय प्रवेश :

मिथिलेश्वर के उपन्यास की सांसारिक रचना में ग्रामीण मौलिकता और विभिन्न प्रकार की विधाएँ उनकी प्रयोगशीलता को जीवन के विभिन्न आचरणों से जोड़ा है। उपन्यास एक दिशा बोधक विधा है, जिसमें विभिन्न संस्कृति और सभ्यता का समन्वय रहता है। "उपन्यासकार अपनी औपन्यासिक रचनाओं के माध्यम से नव्यविधा का उदय करता है। समाज के कई पक्ष द्रष्टव्य होते।"[1]

मिथिलेश्वर ने अपने उपन्यासों के द्वारा बिहारी संस्कृति एवं सभ्यता को गतक्रमता से जोड़ा है। मिथिलेश्वर की क्रमबद्धता में अमृतलाल नागर, श्रीलाल शुक्ल, मधुरेश, राही मासूम रजा, दूधनाथ सिंह एवं काशीनाथ सिंह जैसे साहित्यविदों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से मनुष्य को मनोजगत से

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 9, Issue 3 – Sep 2019

क्रमबद्ध किया है। उपन्यासकार व्यवहारिक रूप से मानवीय मनोवृत्तियों का भी सामाजिक यथार्थ चित्रण करता है। जिसमें जीवन की आदिम संस्कृति भी पायी जाती है।

"उपन्यास में भी लम्बी कथा है, समाज का चित्रण है और पात्रों का चरित्र है। उपन्यासकार का उद्देश्य अपनी घनीभूत भावना को नहीं, साक्षात जीवन को प्रस्तुत करना है। उसकी सफलता इसी में है कि वह परोक्ष रहकर पात्रों और कथा को स्वतः विकसित होने दे। पात्र जितने स्वतंत्र और स्वतः-स्फूर्त होंगे, उतने ही वे उपन्यास उपयोगी होंगे। पात्रों की स्वायत सत्ता को उभारना उपन्यास का परम उद्देश्य है। उपन्यास का जीवन महाकाव्य की भाँति प्रतीकात्मक नहीं, यथार्य होता है। तात्पर्य है, उपन्यासकार को जीवन जैसा दिखता और अनुभूत होता है, वह उसे वैसा ही ब्योरे पर चित्रित करने का प्रयत्न करता है। वह जीवन के बनावटी श्रृंगार की उपेक्षा उसके निरीक्षण और विस्तार पर अधिक बल देता है। उसका निरन्तर प्रयत्न रहता है कि प्रस्तुत किया गया जीवन अधिक से अधिक विश्वसनीय बन पड़े।"[2]

मिथिलेश्वर ने अपने उपन्यासों में संघर्षो को दृष्टव्य कर अविचल प्रभावता को अंकित किया है। उनकी रचनाओं में जीवन को अधिक से अधिक वैशिष्ट्य और बोधात्मक बनाया है। उन्होंने अपनी कृतियों के द्वारा ग्रामीण एवं कस्बाई लोगों को चेतना प्रदान की, जिसमें वर्गात्मकता, कलात्मकता एवं पुरातनात्मकता का सम्मिश्रिण कहा जाता है। अधिकांशतः उनकी कृतियाँ विकासात्मक एवं विषयात्मक हैं, रचनाओं में मौलिकता, नवीनता के प्रति एक तारतम्य है। उनके कथोपकथन एवं कथावस्तु में स्वाभाविकता, संघर्ष, रोचकता, चेतना एवं मार्मिकता के तत्व पाये जाते हैं।

"समकालीन उपन्यासों में व्यक्ति एवं समाज दोनों का चित्रण दिखाई देता है। व्यक्ति की नियति, उसका भोगा हुआ यथार्थ, सब कुछ व्यक्ति के चारों ओर घूमता दृष्टिगोचर होता है। इसी कारण आज के उपन्यास में शिल्प को किसी एक बंधे बंधाये मापदण्ड में परखना मुश्किल है। परिवेश, अनुभूति की ईमानदारी, मनः स्थितियों और संस्कारों की भिन्नता ने समकालीन उपन्यास के आन्तरिक तथा बाह्य रूपों को परिवर्तित कर दिया है। आज उपन्यास को निश्चित परिभाषा और प्रतिमानों में बाँधना मुश्किल है।"3

मिथिलेश्वर की साहित्यिक कृतियाँ सृजनात्मक अर्न्तभाव से भरी हैं, उनके उपन्यासों के पात्र विभिन्न प्रकार के संघर्षों से जूझ रहे हैं, जिनमें सामाजिक चिन्तन, प्रगतिशीलता संघर्ष के माध्यम से प्राप्त करना चाहते हैं। कृतिकार के विभिन्न पात्र अपने कथेत्तर जीवन से जुड़ी कई विसंगतियों व विकृतियों को संघर्ष पूर्वक उनको अपने जीवन से हटाना चाहते हैं, जीवन सुखमय और रचनात्मक बन सके। अधिकांशतः मिथिलेश्वर ने अपने उपन्यासों के कथ्य एवं कथानकों में मनुष्य के जीवन का चिन्तनीय बताया है। किस प्रकार से मानव अपनी अनुभूतियों के आधार पर जीवन को प्रगत्यात्मक बनाकर विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति करता है।

मिथिलेश्वर ने सामाजिक स्त्री समस्याओं के सभी कारणों पर विचार किया है। वे किसी न किसी रूप में सामाजिक सरोकारों से जुड़े है। देश की उन्नति के लिए सामाजिक संगठन, पारिवारिक संगठन का संतुलित होना आवश्यक है। मिथिलेश्वर ने हमारे संगठन की कमियों को उजागर किया और विविध अन्य समस्याओं के साथ स्त्री समस्या पर भी विचार किया और इनकी उन्नति में ही देश की उन्नति मानी है। इन्होंने दासता की जंजीरों में जकड़ी स्त्री के अधिकार की माँग की तथा उसके सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि की वकालत की है। वे सम्पत्ति पर अधिकार देने तथा राजनीतिक अधिकार देने की बात करते है।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 9, Issue 3 – Sep 2019

UGC CARE I

वर्तमान समय में सामाजिक संघर्ष की अधिक प्रचुरता परिवार एवं समाज में व्याप्त है। सामाजिक मूल्यों में काफी तेजी से बदलाव आ रहा है, जिसके द्वारा स्त्री और पुरुष की विचारधारा में चेतनात्मक संघर्षात्मक एवं विरोधात्मक गुण अधिक पनप रहे हैं, जिसमें पुरुष एवं नारी पात्रों की दुर्दशा एवं सामाजिकता को मानवीय मूल्यों से जोड़कर संघर्ष की पगडंडियों पर केन्द्रित किया है। मिथिलेश्वर ने उनको फलकीकृत किया है। जीवन के विभिन्न बिन्दुगत संघर्षो को विचारात्मक बनाकर समाज के लिए एक नवीन पृष्ठभूमि तैयार की जिसमें संघर्ष और चेतना का गठजोड़ है।

मिथिलेश्वर ने अपनी रचनाओं में विभिन्न संघर्षों के साथ-साथ सामाजिक संघर्ष को भी वरियता दी है। आज के बदलते परिवेश में परिवार और समाज में कई प्रकार के संघर्षों की विस्मिता के स्वरूप से कृतिकार ने परिचय करवाया है। उनकी विचारधारा, पारिवारिक जीवन में आने वाले बदलाव पर केन्द्रित है। पति-पत्नी की विचारधारा बदलने के कारण पारिवारिक संघर्षों का उत्पल्लावन हो रहा है। पारिवारिक मूल्यों का टूटना क्रमशः मूल्यों का विलोहन होता जा रहा है। मिथिलेश्वर ने सामाजिक संघर्ष को वर्तमान समय में समाज के लिए एक प्रासंगिक एवं अनुशीलन है। भौतिकवादिता एवं वैश्वीकरण के कारण सामाजिक संघर्ष दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है।

"सेठ अखौरीमल के पुत्र के अपहरण की आज पाँचवी रात है। दहशत और आतंक से अभी तक मैं मुक्त नहीं हो सकी हूँ। स्कूल के कम्पाउण्ड में एक किनारे सेठ अखौरीमल की विशाल इमारत है। बम्बई की उनकी इमारत से किसी भी मामले में कम नहीं। वे उद्योगपति हैं। अनेक कारखानों एवं संस्थाओं के मालिक। बम्बई का अपना कारोबार स्वयं संभालते हैं। यहाँ दिल्ली का कारोबार उनके पुत्र के जिम्मे है। उनके द्वारा 'शिशु निकेतन' की स्थापना तो हाथी के दिखाने वाले दाँत की तरह है कि वे निरक्षरता उन्मूलन एवं शिक्षा के प्रसार में भी लगे हैं। उनके असली कार्य तो विभिन्न उद्योगों को चलाना और मुनाफा हासिल करना है।"[4]

मिथिलेश्वर ने 'प्रेम ना बाड़ी उपजै' में सामाजिक मूल्य तथा पारिवारिक मूल्यों से परिचय करवाया है। आदमी की विचारधारा बड़ी चंचल और चलायमान है, जिसमें उनकी सोच निरक्षरता और संकीर्णता स्पष्ट नजर आती है। 'प्रेम न बाड़ी उपजै' सामाजिक एवं पारिवारिक मूल्यों पर केन्द्रित है। जीवन के हर पक्ष को उभारा है। पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका के रिश्तों को उपन्यासकार ने फलकीकृत किया है। अपनी सोच के अनुरूप प्रेमी युगल से पति-पत्नी बनने के सफर को मिथिलेश्वर ने 'प्रेम ना बाड़ी उपजै' में बताया है। प्रेम को दर्शन के रूप में देखा है। जीवन का व्यवहारिक पक्ष छिपा है। वर्तमान पीढ़ी को प्रेम ना बाड़ी उपजै से दर्शन व शिक्षा ग्रणह करनी चाहिए। प्रेम का स्वरूप कैसा होना चाहिए। उपन्यास का पात्र सेठ अखौरीमल के पुत्र का अपहरण हो जाता है। सेठ उद्योगपति है, जिसके कई कारखाने और संस्था चल रही हैं। उसके दो रूप हैं उद्योगों के माध्यम से अधिक से अधिक मुनाफा कमाता है। मिथिलेश्वर ने अखौरीमल की मानसिकता और विचारधारा को व्यक्त किया है।

"डॉक्टर साहब के आतंक की वजह तो मुझे साफ-साफ समझ में आ रही थी वे दीदी से रूपेश की शादी के पक्ष में नहीं थे। लेकिन अपने पिताजी के आतंक की वजह मैं नहीं समझ पा रहा था। पिताजी को दीदी और रूपेश के प्रेम पर भरोसा नहीं? अगर डॉक्टर साहब की तरह उनका भी दृष्टिकोण भी संकुचित और रूढ़िवादी होता तो उनका यह प्रेम सम्बन्ध कभी नहीं गहराता। पर उन्हें यहाँ तक पहुँचाकर पिताजी अब रोकने क्यों लगे थे? उन्हें सीमाओं में रहने के लिए क्यों मजबूर कर रहे थे? प्रेम तो सीमाहीन होता है क्या उन्हें इस बात की आशंका है दीदी को सम्पूर्णता से प्राप्त कर लेने के बाद रूपेश उनसे शादी से कतराने लगेगा। मेरे जानते यह तो कभी हो ही नही सकता। यह

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 9, Issue 3 – Sep 2019

UGC CARE I

बिल्कुल असम्भव है। पिताजी की तरह वे भी व्यग्रता से इस अवसर की प्रतीक्षा में थे कि शीघ्र दाम्पत्य सूत्र में बध सकें।"[5]

मिथिलेश्वर ने प्रेम ना बाड़ी उपजै में पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्यों से परिचय करवाया, जिसमें डॉक्टर साहब दीदी और रूपेश के बीच में प्रेम की सम्पूर्णता एवं सीमाहीनता को दर्शाया है। शेक्सपीयर के अनुसार Love at first side the course of love did not run smooth. डॉक्टर साहब की सोच संकुचित और रूढ़िवादिता के कारण उनके विचारों में सामंजस्य नहीं था लड़की के पिता आर्थिक दृष्टि से कमजोर भी थे।"[6] प्रेम में संकुचित दृष्टिकोण का होना हमेशा बाधक होता है, जो प्रेमी और प्रेमिका के लिए अबाध गति प्रदान नहीं करता है। अर्थ सामाजिक स्तर पारिवारिक मूल्य सभी दाम्पत्य जीवन के पूर्व और पश्चात् बाधक होते हैं, जो स्वतन्त्रता प्रदान नहीं करते हैं, बल्कि रूपेश और दीदी के प्रेम के बीच एक दीवार की तरह बाधक हैं और जीवन में एकत्व और दाम्पत्य न होने के लिए जिम्मेदार हैं।

वर्तमान समय में वैश्वीकरण के कारण मूल्यों को उभारा है, जिनका समन्वय परिवार और समाज के साथ-साथ प्रेम, प्यार और रति क्रिया भी है। लेखक ने अपने औपन्यासिक कृतियों में जीवन के वैचारिक और सैद्धान्तिक मूल्यों को आलोक वृत्ति से जोड़कर जीवन शैली पर उनकी छठा को उकेरा है। मिथलेश्वर ने अपने उपन्यासों में पारिवारिक एवं सामाजिक संघर्ष को जीवन की बाधा माना है। संघर्ष हमेशा जीवन के विकास को रोकता है।

निष्कर्ष :

1. 'प्रेम ना बाड़ी ऊपजै' केवल एक प्रेम कथा नहीं है, बल्कि यह भारतीय ग्रामीण समाज के सामाजिक ढांचे, जातीय संरचना, स्त्री विमर्श और प्रेम की स्वाभाविकता के संघर्ष की गाथा है।
2. उपन्यास में प्रेम एक दलित युवक 'बिजना' और सवर्ण परिवार की लड़की 'रामकली' के बीच होता है। यह प्रेम सामाजिक व्यवस्था को चुनौती देता है, जहाँ जाति-आधारित भेदभाव अब भी गहराई से व्याप्त है। मिथिलेश्वर इस प्रेम के माध्यम से समाज की उस सोच पर प्रश्न उठाते हैं जिसमें जातिगत ऊँच-नीच को मानवीय संबंधों से ऊपर रखा जाता है।
3. उपन्यास में सवर्ण समाज की सामंती मानसिकता और पितृसत्तात्मक सोच स्पष्ट रूप से सामने आती है। प्रेम को सामाजिक विद्रोह मानकर उसके दमन का प्रयास किया जाता है। यह सामाजिक तंत्र स्त्रियों और दलितों को अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए दबाए रखता है।
4. मिथिलेश्वर ने ग्रामीण जीवन के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने को अत्यंत सजीव ढंग से चित्रित किया है। खेत, मजदूरी, पंचायत, जात-पांत, मेलों और सामाजिक रीति-रिवाजों का चित्रण करते हुए उन्होंने यह दिखाया है कि कैसे गाँव आज भी पारंपरिक मूल्यों और आधुनिकता के द्वंद्व में फँसा हुआ है।
5. मिथिलेश्वर ने इस उपन्यास के माध्यम से प्रेम को सामाजिक चेतना के केंद्र में रखकर उसके संघर्ष, विडंबना और त्रासदी को अत्यंत मार्मिकता से प्रस्तुत किया है।
6. प्रस्तुत उपन्यास समाज में बदलाव की आवश्यकता की ओर संकेत करता है और पाठक को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है।

संदर्भ सूची :

1. सिंहल डॉ. राशि भूषण, हिन्दी उपन्यास के प्रतिमान, कला मन्दिर प्रकाशक, 2002, पृ. सं. 29

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

2. कोटमें पी. वी., श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्प विधान, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, 2004, पृ. सं.52
3. मिथिलेश्वर, 'प्रेम ना बाड़ी ऊपजै' भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2005, पृ. सं. 1
4. वही पृ. क्र. 16
5. वही पृ. क्र. 117
6. वही पृ. क्र. 43

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved